१.१.१ निर्धारित विकसित पाठ्यक्रम दुर्लभ ग्रंथ कार्यक्रम के परिणामों, निर्दिष्ट कार्यक्रम के परिणामों, पाठ्यक्रम के परिणामों और स्थानीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक विकास के लिए आवश्यक सीखने के उद्देश्यों के साथ संस्थान द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी कार्यक्रमों के अनुरूप समाहित हैं।

उत्तर प्रदेश शासनाधिनियम द्वारा स्थापित संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास करना और शास्त्रों का संरक्षण करना है। विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, और वैश्विक विकास के उद्देश्य के अनुरूप समयबद्ध विकास, परिवर्तन और संवर्द्धन के अंशों को समाहित किया गया है। विश्वविद्यालय सभी की बोधगम्यता के लिए सरल मानक संस्कृत में शास्त्रीय विषय और आधुनिक ज्ञानविज्ञान का संवाहक है। वर्तमान में ०५ संकायों के अन्तर्गत २२ विभागों में १३०५ पाठ्यक्रम और १७७ कार्यक्रम संचालित हैं। पाठ्यक्रम में बहु-विषयक और अंत:विषयक पाठ्यक्रम के साथ शास्त्री, आचार्य, विद्यावारिधि, विद्यावाचस्पति, डिप्लोमा, प्रमाणपत्र और सेतु कार्यक्रम निर्धारित हैं। वेद, व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य, भाषाविज्ञान, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र और दर्शन विषयों में स्थानीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक विकास के आयामों को विभिन्न रीतियों से पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

- पाठ्यक्रम में स्थानीय विकास से संबंधित विषय समाहित हैं यथा पुराण विभाग के शास्त्री स्तरीय पाठ्यक्रम में स्कन्दपुराणान्तर्गत काशीखंड नामकग्रन्थ निर्धारित है, और यह ग्रन्थ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भी किया गया है। पाठ्यक्रम में स्थानीय प्रतीकों यथा गंगा के अवतरण, मणिकर्णिका का वर्णन तथा अन्य स्थानीय तीर्थों की महिमा का परिचय पुराणेतिहास पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के पांचवें प्रश्न पत्र में ब्रह्म-वैवर्त पुराण के अंतर्गत काशीरहस्य नामक ग्रन्थ में निहित है । संस्कृतविद्या शास्त्री द्वितीय वर्ष के षष्ठ पत्र में निर्धारित भगवद्गीता में काशीराज का वर्णन ,शास्त्री तृतीय वर्ष ज्योतिष विषयक ग्रन्थ सिद्धान्तशिरोमणि में गंगा का महत्वस्थानीय अवबोधन को दृढ करता है।
- सम्बद्ध स्थानीय सुप्रतिष्ठित ऋषि-महर्षि महात्माओं एवं सन्तों द्वारा प्रणीत यथा शंकराचार्य के शांकरभाष्य का वेदान्त के पाठ्यक्रम में, सौन्दर्यलहरी का योगतन्त्र आचार्यद्वितीय खण्ड के प्रथम पत्र में तथा महात्माबुद्ध द्वारा प्रदत्त उपदेशों का बौद्धदर्शन के शास्त्री स्तरीयपाठ्यक्रममें धम्मपद व बोधिचर्यावतार निवेश किया गया है । पाठ्यक्रम में निर्धारित यंत्रों के अध्ययन के लिए काशी में मानमंदिर स्थित वेधशाला के अनुसार परिसर में निर्मित सुधाकरद्विवेदी वेधशाला छात्रों के ज्योतिष विषयक खगोलीय विषयावबोध के साथ साथ स्थानीय प्रबोधन को प्रोन्नत करती है। आचार्य द्वितीय वर्ष में पौरोहित्य पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम प्रश्नपत्र में निर्धारित देवालयवास्तुविमर्शः स्थानीय मंदिरों के साथ साथ भारतीय वास्तु एवं स्थापत्यकला का बोध कराता है । पाठ्यक्रम में प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास शामिल है जो राष्ट्रीय महत्व का है।

- प्रादेशिक विषयों के क्रम में उत्तर प्रदेश राज्य के प्रति भी अवबोधन का दायित्व पाठ्यक्रम निर्वहण करता है। इतिहास पाठ्यक्रम में रानी लक्ष्मीबाई और लाल बहादुर शास्त्री की चर्चा है वहीं साहित्य एवं पुराण विषय के शास्त्री एवं आचार्य द्वितीय वर्ष में क्रमशः नैषधीयचरित तथा महाभारत व रामायण ,पुराणादि ग्रन्थ में छात्रों को

राज्य संस्कृति की विशेषताओं अयोध्या, मथुरा, प्रयाग नेमिषारण्य तथा अन्य पवित्र स्थानों के वैशिष्ट्य का बोध कराया जाता है । राष्ट्रीय भावना को दृढ करने के उद्देश्य से वेदविषयक पाठ्यक्रम में आचार्य द्वितीय वर्ष में विविध सूक्तों के माध्यम से एक पाठ्यक्रम निर्धारित है। पौरोहित्य पाठ्यक्रम और फलित ज्योतिष में मंदिर वास्तुकला से समबन्धित ग्रंथ बृहत्संहिता आचार्यस्तर में समाहित है। विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों के अनुसार ग्रहगणित के आधार पर विश्वस्तरीय दृक्सिद्धपंचाग का प्रकाशन भी करता है।

- राजशास्त्रविषय के शास्त्री स्तरीय पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रन्थ कौटिलीय अर्थशास्त्र भारत की सामाजिक स्थिति एवं आर्थिक स्थिति के साथ-साथ वैश्विक दृष्टिकोण भी प्रदान करता है । मुण्डकोपनिषत् में समागत भारत का प्रतीक ध्येय वाक्य "सत्यमेव जयते वेदान्त" विषयक पाठ्यक्रम में शास्त्री स्तर में निहित है । सिद्धान्त ज्योतिष के आचार्यस्तरीय पाठयांश में केतकीग्रहगणित तथा शास्त्रीस्तरीय सिद्धान्तशिरोमणि में भारत के नगरों का एवं सम्पूर्णविश्व भौगोलिक वर्णन एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन के विभागीय स्नातकस्तरीय पाठ्यक्रम में विविध धर्मों एवं मतानुयायियों यथा सिक्ख धर्म, कबीर, आर्यसमाज के एवं कन्फ्यूशीवाद, ताओवाद फारसीवाद जैसे पश्चिमी सिद्धांतों के निवेश वैश्विक एकता की भावना के अवबोधन को दृढ करता है। तुलनात्मकधर्मदर्शन के शास्त्रीस्तरीय तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम में सभी धर्मों की समानता के दृष्टिकोण से तुलनात्मक सामाजिक दर्शन और अनुष्ठानों में सनातन, इस्लाम, बौद्ध, जैन, फारसी और ईसाई धर्मों के त्यौहारों का समन्वित अध्ययन निर्धारित किया गया है। धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में मनुस्मृति,याज्ञवल्क्य स्मृति,व्यवहारमयूख आदि पाठ्यग्रंथों में षोडश संस्कारों के विधान भारतीय ज्ञान परम्परा की वैज्ञानिकता एवं आध्यात्मिकता को विश्व पटल पर स्थापित करता है ।

- पाठ्यक्रम में विविध स्थलों में निर्धारित श्रीमद्भगवदगीता तथा वैदिक और दार्शनिक पाठ्यक्रमों में आचार्य के द्वितीय वर्ष के प्रथमपत्र में निर्धारित संहिता, आरण्यक, ब्राह्मण और उपनिषद् यथा अथर्ववेद के शास्त्री विषयक पाठ्यक्रम मे पृथ्वीसूक्त , कठोपनिषद् में वर्णित सहनाववतु सह नौ भुनक्तु ....मा विद्विषावहै , प्रश्नोपनिषत् में स एव वैश्वानरो विश्वरूपः इशावास्योपनिषत् में इशावास्यमिदं सर्वम् मुण्डकोपनिषत् में भद्रकर्णेभिः , वसुधैव कुटुम्बकम् , यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्, आ नो भद्राः, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् इत्यादि सूक्तांश सर्वे भवन्तु सुखिनःकी वैश्विक एकता की अवधारणाओं को सम्पुष्ट करते हैं।

- भारतीय ज्ञानपरम्परा के संरक्षण हेतु विभिन्न पाठ्यक्रमों में दुर्लभ ग्रन्थों का संयोजन किया गया है। विशेष रूप से वेद, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, दर्शन, पालि, बौद्ध संस्कृतविद्या और राजशास्त्र में शिक्षण और अनुसंधान में पाठ्यपुस्तकों के अंश के रूप में मानवीय मूल्यों का स्फुरण करने वाले दुर्लभ ग्रंथों का एक अनूठा संयोजन है। उदाहरणार्थ संस्कृत विद्या पाठ्यक्रम में शास्त्री कक्षा में विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि, राजशास्त्र पाठ्यक्रम में कौटिलीयअर्थशास्त्र, कामन्दक नीति, बौद्ध दर्शन पालि पाठ्यक्रम मेंमिलिन्दपंहपालि न्यायवैशेषिक विषय में न्यायसिद्धान्तमंजरी ज्योतिष में सिद्धान्ततत्वविवेक, सूर्यसिद्धान्त, प्रतिभाबोधकम्,सिद्धान्तसुन्दरम् इत्यादि प्रमुख हैं ।

इस प्रकार मानवीय मूल्यों का ज्ञान एवं अवबोधन कराने वाले वाले ऋषिप्रणीत दुर्लभ ग्रंथों को पाठ्यक्रम में समाहित कर संरक्षित एवं संवर्द्धित करना संस्था का विशिष्ट उद्देश्य है। विद्यार्थी ज्ञान अर्जित कर अपने ज्ञान के वैभव से समाज को आलोकित करते हैं। स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक प्रकल्पों यथा श्रावणी उपाकर्म, गंगा आरती, कर्मकांड, सामाजिक प्रबोधन एवं अन्य प्रकल्पों से समाज को उन्नत कर रहे हैं । पाठ्यक्रम द्वारा राष्ट्रियस्तर में अध्यापन, प्रशासन, प्रौद्योगिकी , सैन्य,अनुष्ठान , संचार आदि क्षेत्रों में कुशलता निष्पादित की जाती है । विभिन्न स्तरों पर शैक्षणिक प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर छात्र प्राचीन ज्ञान की परंपरा को संरक्षित एवं संवर्द्धित कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के सहस्राधिक छात्र अपनी कार्यदक्षता से विभिन्न शासकीय एवं स्वपोषित निकायों में अध्यापक,प्रशासक,कलाकार,धर्मगुरू,कुलपति,धर्मोपदेशक आदि के रूप में समाज को अपनी सेवा से लाभान्वित कर रहे हैं। विश्वविद्यालयीय छात्र राष्ट्रपति पुरस्कार और पद्म पुरस्कार सहित क्षेत्रीय, प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पुरस्कारों से अलंकृत हैं।

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में अध्ययन परिषद द्वारा समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार और परिष्कृत किया जाता है। विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम को प्राथमिकता के तौर पर बदलने और परिष्कृत करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय दिशा, देश और काल के अनुरूप पाठ्यक्रम को निर्बाध रूप से संशोधित, संवर्धित और प्रसारित करता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त निर्देशों के अनुसार, विश्वविद्यालय विनियमों के अनुसार समस्त पाठ्यक्रमों में एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम आधारित दृष्टिकोण लागू है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों के अनुसार पाठ्यक्रम को संशोधित और सम्वर्द्धित किया गया है।

1.1.1 QlM

विकसितापाठ्यचर्या/ स्वीकृताःदुर्लभाःशास्त्रग्रन्थाः, स्थानीय-राष्ट्रिय-प्रादेशिक-वैश्विकविकासस्यआवश्यकतयाअधिगमोद्देश्यैः कार्यक्रमस्यपरिणामैः, निर्दिष्टकार्यक्रमस्य परिणामैः, पाठ्यक्रमस्यपरिणामैः, संस्थया प्रस्तुतानां सर्वेषां कार्यक्रमाणां च परिणामैः सहसङ्गतिं भजन्ते।

उत्तरप्रदेशशासनाधिनियमेन स्थापितस्य सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य मुख्यं लक्ष्यं वर्तते भारतीयज्ञानपरम्परायाः विकासः, शास्त्रसंरक्षणाय च प्रयासाः। विश्वविद्यालस्य पाठ्यक्रमे स्थानीयराष्ट्रीय-प्रादेशिक-वैश्विक-विकासस्य प्रयोजनानुगुणं यथासमयं विकासो विहितः, परिवर्तनं परिवर्धनं च विधीयते।

- विश्वविद्यालयः सर्वेषांकृते सौकर्येण सरलमानकसंस्कृतेन शास्त्रीयविषयान् आधुनिकज्ञानविज्ञानविषयान् च प्रसारयति। विश्वविद्यालये २२ विभागेषु ०५ संकायेषु १३०५ पाठ्यक्रमाः १७७ कार्यक्रमाःसम्प्रति संचालिताः सन्ति।

- पाठ्यक्रमेषु च बहुविषयकाः अन्तर्विषयकाश्च पाठ्यक्रमाः कार्यक्रमाश्च सन्ति शास्त्रि-आचार्य-विद्यावारिधि-विद्यावाचस्पति-डिप्लोमा-प्रमाणपत्र-सेतुकार्यक्रमाः प्रचलिताः सन्ति।
- वेद-व्याकरण-ज्योतिष-साहित्य-भाषाविज्ञान-राजशास्त्र-अर्थशास्त्र-शिक्षाशास्त्र-दर्शनादिविषयेषु च विविधरीत्या पाठ्यचर्यायाः स्थानीयराष्ट्रीयप्रादेशिकवैश्विकविकासस्य पक्षाःसमाविष्टाः सन्ति।
- पाठ्यचर्यायां छात्राध्यापकविचारविमर्शजनितपरिणमैः विभागीय-संकायीय-विश्वविद्यालयीयसमित्या स्तरानुगुणं वृद्धिः प्रतिवर्षं कल्प्यते।
- पाठ्यचर्यायां स्थानीयविकासम्बन्धिनो विषयाः बहुशः समाविष्टाः यथा पुराणविषयकपाठ्यक्रमे पुराणान्तर्गतस्य काशीखण्डस्य अध्ययनमध्यापनं च विधीयते, विश्वविद्यालयद्वारासच ग्रन्थो प्रकाशितश्च विद्यते। काशीप्रतीकानां सांस्कृतिकमूल्यानां गंगावतरणादीनां विवरणं विशिष्टानां महापुरूषाणां महात्माबुद्ध-स्वामीविवेकानन्द-पण्डितराज-जगन्नाथ-रघुनाथशमप्रणीतानां कृतीनां उपदेशानां च निवेशः पाठ्यक्रमे वर्तते। काशीस्थमानमन्दिरवेधशालामनुसृत्यैव परिसरे वेधशाला छात्राणां कृते स्थानीयभावनया सह वैश्विकीं भावनां च परिपोषयति। आचार्य द्वितीयवर्ष पौरोहित्य पाठ्यक्रमे देवालयवास्तुविमर्शः निर्धारितः वर्तते तस्य च विविधस्तरेषुविनियोगः वर्तते।
- काशीसांस्कृतिकप्रतीकानां परिचयः गंगातीर्थादिमाहात्म्यं च पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिप्रथमवर्षे पंचमप्रश्नपत्रे ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गतं काशीरहस्यमिति नाम्ना संयोजितं विद्यते । तत्रैव च पष्ठपत्रे प्राचीनभारतस्य राजनीतिकेतिहासः पाठ्यक्रमे समाविष्टः यस्य राष्ट्रियमहत्वं विद्यते ।
- प्रादेशिकस्तरे उत्तरप्रदेशराज्यमपि संस्थेयं स्वपाठ्यचयर्या सम्पोषयति। भाषापाठ्यक्रमेषु रानीलक्ष्मीबाई-लालबहादुरशास्त्रिप्रभृतीनां अभिनिवेशो विद्यते। राज्यसांस्कृतिप्रतीकानां अयोध्यामथुरा प्रयागादितीर्थस्थलानां शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे नैषिधीयचरितेवाराणस्याः वैशिष्ट्यं छात्रेषु प्रतिबोध्यते तथैव शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे वाल्मीकिरामायणे अयोध्यायाः महाभारते च मथुरायाः तीर्थराजप्रयागस्य च वर्णनं समायाति। राष्ट्रीयसर्वधर्मभावविकासाय तुलनात्मकधर्मदर्शनविभागे विभिन्नधर्मावलम्बिनां सिद्धान्ताना सिक्ख-कबीर-आर्यसमाजसहितं पाश्चात्यदेशीयसिद्धान्तानांकन्फ्यूशियस-ताओ-फारसीधर्मादीनां सहैवाध्यायनं विधीयते।
- शास्त्रितृतीयवर्षे सूक्तरत्नसंग्रहःइति ग्रन्थःकाशीविदुषा श्रीगोपालचन्द्रमिश्रेण एव प्रकाशितः पाठ्यक्रमे निर्धारितः विद्यते।

- राष्ट्रियावश्यकतानां विषये वेदपाठ्यक्रमे आचार्यद्वितीयवर्षे वैदिकभारतविषये पाठ्यक्रमः निर्धारितः वर्तते। पौरोहित्यपाठ्यक्रमे फलितज्योतिषे च देवालयवास्तुविमर्शः इति पाठ्यक्रमः निर्धारितः वर्तते।
- कौटिलीयार्थशास्त्रम्-प्राचीनराजशास्त्रपाठ्यक्रमेवैश्विकावश्यकतानां संगतिं प्रददाति।
- वैश्विकविकासदृष्ट्या तुलनात्मकधर्मदर्शने शास्त्रितृतीयवर्षे श्रीमदभगवद्गीताविश्वैकतां सम्पोषयति।
- वेदविषयकपाठ्यक्रमे दर्शनविषयकपाठ्यक्रमे च आचार्यद्वितीयवर्षे प्रथमपत्रे निर्धारितेषु संहिता-आरण्यक-ब्राह्मण-उपनिषत्सु वसुधैवकुटुम्बकम् यत्र विश्वंभवत्येकनीडम्, आ नो भद्राः,कृण्वन्तो विश्वमार्यम् प्रभृतयः मन्त्राः वैश्विकविकाशस्य अवधारणाः ज्ञापयन्ति।
- तुलनात्मकधर्मदर्शने शास्त्रितृतीयवर्षस्यपाठ्यक्रमे सर्वधर्मसमभावदृष्ट्या तुलनात्मकं समाजदर्शनम् कर्मकाण्डे च सनातन-इस्लाम-बौद्ध-जैन-फारसी-इसाई-धर्माणां पर्वणामपि समन्वयात्मकं अध्ययनं विधीयते । षोड़शसंस्काराणां विषये धर्मशास्त्रस्य सम्पूर्णे पाठ्यक्रमे चर्चा विद्यते ।

- विविधेषुविभागेषुदुर्लभशास्त्रग्रन्थानां भारतीयविद्यासंरक्षणायसंयोजनं कृतंविद्यते। विशेषतः वेदज्योतिषधर्मशास्त्र-दर्शन-पालि-बौद्ध-राजशास्त्रप्रभृतिषुविभागेषुआचारविचारनीति-मानवमूल्यसंवर्द्धकानांदुर्लभग्रन्थानांपठनपाठनेशोधकार्येचपाठ्यांशत्वेनभूयस्संयोजनंविद्यते। यथा संस्कृतविद्यापाठ्यक्रमे शास्त्रिस्तरे विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिः, राजशास्त्रपाठ्यक्रमे शास्त्रिस्तरे कैटिलीयार्थशास्त्रम्, कामन्दकनीतिः, न्यायवैशेषिकविषये शास्त्रिस्तरे न्यायसिद्धान्तमंजरी, बौद्धदर्शनपालिपाठ्यक्रमे मिलिन्दपंहपालि, ज्योतिषे शास्त्रिस्तरे फलिते सिद्धान्ते च सूर्यसद्धिान्तः, सिद्धान्तसुन्दरम्, धर्मशास्त्रे च आचार्यप्रथमवर्षे तृतीयपत्रे श्राद्धप्रकाशः आचारसिद्धिः इति प्रभृतयःदुर्लभग्रन्थाः पाठ्यक्रमे वर्तन्ते।

अनेनदुर्लभग्रन्थानांपाठ्यक्रमे सन्निवेशस्य मौलिकप्रयोजनं संरक्षणं मानवीयमूल्यानां प्रबोधनं च विद्यते ।विश्वविद्यालयस्यायसर्वेषुविभागेषु ऋषिप्रणीतग्रन्थाः विशेषरूपेणपाठ्यक्रमेअङ्गीकृतास्सन्ति।

- ➢ विश्वविद्यालयस्यपाठ्यक्रमेणसर्वविधज्ञानं छात्रेषुसंरक्षितंभवति ।
- ➢ ज्ञानार्जनेनदक्षाः छात्राः स्वविद्यावैभवेनसमाजंप्रकाशयन्तिशास्त्रानुकूलव्यवहारेण समाजस्तरमुअभिवर्द्धते।
- ➢ छात्राः स्थानीयस्तरे सांस्कृतिकोपक्रमेषु यथा श्रावणी उपाकर्म, गंगा-आरती, कर्मकाण्डादिसामाजिक प्रकल्पेषु दक्षाःभवन्ति।
- ➢ विविधस्तरेषुशैक्षणिकप्रतियोगितासु भागं गृहीत्वा प्राचीनज्ञानपरम्परायाः सम्वर्धनं कुर्वन्ति।

- राष्ट्रियस्तरे अध्यापनक्षेत्रे, प्रशासनक्षेत्रे प्रौद्योगिकीयकीयक्षेत्रे सैन्यक्षेत्रेधर्मगुरुरूपेण कर्मकाण्डक्षेत्रे, कथाप्रवचनोद्बोधनक्षेत्रेषु प्रवाचकरूपेणसहैवआरक्षक्षेत्रे आरक्षकरूपेणसंचारक्षेत्रेपत्रकाररूपेणराजनीतिकक्षेत्रे जनप्रतिनिधिरूपेणदेशंसेवन्ते।
- क्षेत्रीयप्रादेशिकराष्ट्रीयस्तरेषु विशिष्टपुरस्कारैः राष्ट्रपतिपुरस्कारैश्चपद्मपुरस्कारैश्चविश्वविद्यालयी याःछात्राः विभूषिताः भवन्ति।

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये समाजापेक्षानुरूपम् पाठ्यक्रमस्य निर्माणं परिष्करणञ्च अध्ययनपरिषदा क्रियते। पाठ्यक्रमपरिवर्तनाय परिष्करणाय च विश्वविद्यालयोयं प्राथम्येन सततं यतते। दिग्देशकालानुरूपं पाठ्यचर्याणां संशोधनं परिवर्द्धनं प्रसारणञ्च विश्वविद्यालयोयं निर्बाधतया कुरुते। विश्वविद्यालयानुदानायोगपक्षतः प्राप्तनिर्देशानुसारं विश्वविद्यालयीयपरिनियमानुसारेण सर्वेषु स्नातकस्तरीयपाठ्यक्रमेषु ऐच्छिकपाठ्यक्रमाश्रितपद्धतिः प्रचलितास्ति। रष्ट्रियशिक्षानीति 2020 द्वारा प्रदत्तनिर्देशानुसारेण पाठ्यक्रमस्य संशोधनं परिवर्धनं च कृतमस्ति।